

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2012

समय : 3 घन्टे

प्रश्न पत्र-III

कुल अंक : 50

नोट :- कुल पांच प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्न 1 एवं 6 अनिवार्य हैं। प्रत्येक भाग से कम से कम एक और प्रश्न का उत्तर देते हुए शेष तीन प्रश्नों का उत्तर दें। सब प्रश्नों का अंक समान है।

भाग-I (आयुर्दाय)

1. नीचे दी गई कुण्डली के आधार पर पिण्डायु की गणना करें :-

जन्म तारीख 28.6.1921, समय 1.02 दोपहर में, स्थान-वारंगल

शनि की भोग्य दशा : 8वर्ष 08 महीने 17 दिन

लग्न/ग्रह	राशि	अंश	कला
लग्न	कन्या	24	48
सूर्य	मिथुन	13	16
चन्द्रमा	मीन	10	33
मंगल	मिथुन	13	33
बुध (व)	मिथुन	27	41
बृहस्पति	सिंह	20	06
शुक्र	मेष	27	40
शनि	सिंह	26	26
राहु	तुला	01	26
केतु	मेष	01	26

2. विस्तार से बताए कि मारक ग्रह क्या है? क्रमवार मारको का वर्णन करें।

3. बालरिष्ट क्या है? इनके योग भी बताए।

4. इनमें से किन्हीं तीन पर संक्षिप्त में टिप्पणी लिखिए :-

अ. दिन मृत्यु

आ. गंडांत

इ. बालरिष्ट कब भंग हो सकता है?

ई. छिद्र दशा

5. अल्पायु, मध्यायु और पूर्णायु को जानने के क्या-क्या सामान्य नियम हैं?

भाग-II (चिकित्सा ज्योतिष)

6. 'सही' अथवा 'गलत' का चयन करें :

अ. नसों का कारक शनि है।

आ. शुक्र, कन्या राशि और 6 भाव, हृदय के कारक है।

इ. बृहस्पति यकृत (कलेजा) रोग प्रदान करता है।

ई. बली लग्नेश स्पष्ट दर्शाता है कि जातक रोग से पूर्णतया निकल जाएगा।

उ. मंगल और सूर्य वात दोष को दर्शाते हैं।

ऊ. सूर्य का लग्न में होना गंजापन देता है।

ए. अशुभ ग्रहों का केन्द्र में होना और शुभ ग्रहों का 3,6,11 में होना अच्छा

स्वास्थ्य देता है ।

ऐ. रोग के उपरांत यदि शुभ ग्रह की दशा हो तो स्वास्थ्य लाभ दिखता है ।

ओ. यदि चन्द्रमा पीड़ित हो तो अधिकतर मानसिक विकार होता है।

औ. मिथुन, तुला व कुम्भ श्रवास व धसन तन्त्र को दर्शाते हैं।

7. वक्री ग्रहों का चितित्सा ज्योतिष में क्या योगदान है? उदाहरण के द्वारा स्पष्ट कीजिये।

8. इनमें से किन्हीं चार के योगों को बताए :

अ. गुर्वे का रोग

आ. गटिया

इ. बवासीर

ई. दुर्घटना

उ. मधुमेह

ऊ. लकवा

9. नीचे दी हुई कुण्डली एक जातक की है जिसका पिताशय को निकालने की सर्जरी (चीर-फाड़) की गई क्योंकि पित्त की थैली में, चन्द्रमा-बुध-बृहस्पति की दशा में पत्थरी बन गई थी। कृपा बताएँ कि यह सब इस कुण्डली से कैसे देखेंगे?

जन्म की तारीख : 28.06.1959 समय : शाम 06.50 बजे, स्थान :

शिमला (हिमाचल प्रदेश) :

बुधा की भोग्य दशा : 12 वर्ष 11 महीने 01 दिन

लग्न/ग्रह	राशि	अंश	कला
लग्न	धनु	04	44
सूर्य	मिथुन	12	48
चन्द्रमा	मीन	19	52
मंगल	कर्क	23	15
बुध	कर्क	06	31
बृहस्पति (व)	तुला	29	33
शुक्र	कर्क	28	06
शनि (व)	धनु	10	18
राहु	कन्या	15	37
केतु	मीन	15	37

10. इनमें से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए :-

अ. चिकित्सा ज्योतिष में त्रिक भाव का क्या महत्व है?

आ. चिकित्सा ज्योतिष में काल पुरुष के महत्व को समझाए।

इ. 3, 6, 9 और 11 भाव कुण्डली में किन-किन अंगों को दर्शाते हैं तथा इन भावों के कारक कौन से ग्रह हैं?